आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:15-11-14

हम भाग्यशाली आत्माओं को अपना सब-कुछ देकर हमें मास्टर रचयिता बनाने वाले, नवयुग-सतयुग के रचयिता, परमपिता-परमात्मा बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम हो त्रिमूर्ति बाप के बच्चे, तुम्हें अपने तीन कर्तव्य सदा याद रहें - स्थापना, विनाश और पालना.

सारे संसार की सभी मनुष्य आत्माये एक ही परमपिता-परमात्मा की संतान है और सभी उसे ही याद करते है. लेकिन किसी भी आत्मा को गॉड का कर्तव्य क्या है, यह मालूम नहीं. अब गॉड ने स्वयं आकर हम सब भाग्यशाली आत्माओं को बताया है कि वही नयेयुग-सतयुग की स्थापना और पालना करते है. जैसे-जैसे नये की स्थापना होती जाती है पुराने का विनाश स्वतः ही हो जाता है. भगवान के यह कार्य में वही आत्माये सहयोग करती है जिन्हें सतयुग के शुरु में पार्ट बजाने आना हैं या कहे पुरा ८४ जन्म लेते हैं.

वह रचयिता बाप ने आज हमारा कर्तव्य याद दिलाते हुए कहा, बच्चों को स्थापना, विनाश और पालना - तीनों की याद होनी चाहिए क्योंकि साथ-साथ इकट्ठा चलता है ना. जीतना हम बाप को याद करते है उतनी हमारी आत्मा पवित्र बनती जाती है. यह भी बुद्धि में है कि पवित्र बन फिर हम पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे. बाप की याद में जैसे हमारी आत्मा पवित्र बनती है तो साथ में यह इमप्योर दुनिया का विनाश भी जरूर होगा. तो स्थापना और विनाश दोनों ही कार्य एक बाप की याद में रहने से ही हो जाता हैं. यह तो बहुत ही सहज तरीका हैं. बाबा हमें कल्प-कल्प कहते हैं - हे बच्चों, मामेकम याद करो. सर्वशक्तिमान बाप को याद करो.

वह तो एक ही बाप है, उनको याद करने से हमारी आत्मा पवित्र बनेगी. हम पवित्र बनेंगे तो नई सतयुगी दुनिया में श्रीकृष्ण के साथ आयेंगे फिर पुरानी दुनिया का विनाश भी स्वतः ही हो जायेगा. यह तो बहुत सीधी बात हैं.

बाबा कहते है जैसे वह लौकिक पढ़ाई में सब नम्बरवार पास होते है वैसे ही यह ईश्वरीय पढ़ाई में भी नम्बरवार पास होंगे. जो होशियार है वह तो फिर पढ़ कर दूसरों को भी पढ़ाते रहेंगे. यह ईश्वरीय पढ़ाई में अच्छे नम्बर से पास होने के लिए देह-अभिमान का त्याग करना जरूरी हैं.

आज बाबा ने हमें इस ईश्वरीय सेवा में देह अभिमान न आये इसलिए कुछ बातें बताई है उसे नोट करेंगे.

- जैसे बाप कहते है मैं तुम बच्चों का सर्वेन्ट हूँ. वैसे बच्चों को भी खुद को ईश्वरीय सर्वेन्ट समझना हैं. - निरअहंकारी होकर चलना.

- अन्य सेवाधारीओ के प्रति कोई भी बात से जैलसी न हो. जैलसी बहुत गंदा विकार है जो आत्मा को अन्दर ही अन्दर जलाता हैं. - इसके लिए ड्रामा का ज्ञान ऐप्लाई करना है.

- ब्राह्मण जीवन में बेपरवाह नहीं होना हैं. ईश्वरीय नियमों अनुसार मर्यादा युक्त अपना ब्राह्मण जीवन बनाना तो माया का वार गिरायेगा नहीं.

- अगर सेवधारी की दिल साफ नहीं है तो भी बाप के दिल पर नहीं चड़ सकेंगे. स्व से और बाप से सदा सच्चा रहना.

- कोई भी बात से सेवाधारी को अपना मूड ऑफ नहीं करना हैं. मूड ऑफ करने से अपनी ही खुशी गँवा देंगे. कुछ भी हो जाये सदा खुश रहना हैं.

ॐ शांति.